अबाध

एक व्यापक दर्शन

डॉ. डेविड प्लैट

26 मार्च, 2006

एक व्यापक दर्शन

रोमियों 1–3

जब आप मेरे साथ रोमियों 5 को निकालते हैं, तो मैं आपको एक कहानी सुनाना चाहता हूँ जो मेरे विचार से उसका आधार तैयार करेगी जिसके बारे में परमेश्वर के वचन के अध्ययन के दौरान मैं बात करना चाहता हूँ। और मैं जानता हूँ और मेरे विचार से पहले भी मैं इस बात को बता चुका हूँ कि प्रचारकों में बढ़ा–चढ़ाकर कहने की प्रवृत्ति होती है, और उसके लिए मैं क्षमा चाहता हूँ, लेकिन शुरूआत में ही मैं आपको बताना चाहता हूँ कि इस कहानी में, जो कहानी मैं आपको सुनाने जा रहा हूँ उसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है।

एक कलीसिया है जिसमें मुझे कई बार प्रचार करने का अवसर मिला है और परमेश्वर ने मुझे उस कलीसिया के साथ एक संबंध को विकसित करने का अवसर दिया है। यह एक छोटी कलीसिया है, बड़ी कलीसिया नहीं है, लेकिन मुझे वहाँ एक सम्मेलन में प्रचार करने का मौका मिला जहाँ उस कलीसिया के कुछ सदस्य थे और फिर उन्होंने मुझे वहाँ कई बार प्रचार करने के लिए बुलाया। वहाँ लोगों का एक छोटा समूह है जो निरन्तर मेरे लिए प्रार्थना करता है। और वास्तव में, मैं ने उनसे कभी कुछ कहा नहीं है, कभी उनसे कुछ माँगा नहीं है, लेकिन वे परमेश्वर द्वारा मुझे दी गई सेवकाई में सहायता करने के लिए नियमित रूप से चैक भेजते हैं।

एक रविवार के दिन, रविवार सुबह मुझे वहाँ प्रचार करना था। मेरी पत्नी हेदर और मैं शनिवार को ही वहाँ पहुँच गए और मैं महान आज्ञा पर, सारी जातियों को चेला बनाने के विषय पर प्रचार करने की योजना बना रहा था। शनिवार रात जब हम वहाँ पहुँचे तो हम एक घर में गए जहाँ पासबान और उनकी पत्नी और दो डीकन अपनी पत्नियों के साथ थे, और हमने एक साथ भोजन किया और उसके बाद बैठकर आपस में बात करने लगे।

मैं वहाँ उनके साथ बैठा हुआ उन्हें कुछ ऐसी बातों के बारे बता रहा था जिन्हें परमेश्वर मेरे अपने जीवन में और उस सेवकाई में कर रहा था जिसका हिस्सा बनने का परमेश्वर ने मुझे अवसर दिया था, चाहे न्यू ऑरलेन्स में बेघर लोगों के बीच कार्य हो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किया जा रहा कार्य हो। और फिर मैं उन्हें बताने लगा कि किस तरह परमेश्वर ने मेरे लिए विदेशों में कुछ कठिन स्थानों में जाकर ऐसे लोगों के बीच में सुसमाचार का प्रचार करने का मार्ग खोला था, जो मसीह के घोर विरोधी थे।

और जो हुआ उसे मैं कभी नहीं भूल सकता, जब मैं इन बातों को बता रहा था तो एक डीकन अपनी कुर्सी पर अच्छी तरह से बैठा और बोला, "डेविड, हम तुम्हें बताना चाहते हैं कि वहाँ हो रही इन सारी बातों के लिए हम अत्यधिक उत्साहित हैं।" उसने कहा, "यदि तुम मुझसे पूछो कि उन सारे लोगों का क्या किया जाए जिनके बारे में तुम बता रहे हो और जो मसीहियत के घोर विरोधी हैं, तो मेरा मानना है कि परमेश्वर को उन सब लोगों का उन्मूलन करके उन्हें नरक में डाल देना चाहिए।" आप मुझ से पूछें कि मैं ने उसका क्या जवाब दिया, मैं ने कुछ नहीं कहा।

मैं नहीं जानता था कि क्या कहूँ, मैं दंग रह गया था। "मेरा मानना है कि परमेश्वर को उन सब लोगों का नाश करके उन्हें नरक में डाल देना चाहिए।"

बातचीत चलती रही और आगे बढ़ी और मैं सोचने लगा, ठीक है, मुझे सुबह महान आज्ञा पर प्रचार करना है, और यह बहुत ही मजेदार होगा। अतः, अगली सुबह मैं उठा, कलीसिया सभा में गया और स्वागत के दौरान पासबान वहाँ उपस्थित सब लोगों का स्वागत करने वाले थे। और मेरे प्रचार के लिए उठने से पहले पासबान कहने लगे कि अत्यधिक कृतज्ञ हैं क्योंकि वे संयुक्त राज्य अमरीका में रह रहे हैं। और वह बताने लगे कि संयुक्त राज्य अमरीका में रहना कितना अच्छा था। और कहा कि संयुक्त राज्य में उपलब्ध सारी सुविधाओं के कारण वे कभी भी अमरीका से बाहर किसी भी देश में नहीं रहना चाहेंगे।

यह वास्तव में देशभक्ति से परिपूर्ण भाषण था। मैं सोचने लगा, पासबान ने अभी घोषणा की है कि वे कभी भी संयुक्त राज्य से बाहर नहीं रहना चाहेंगे और मैं सारी जातियों को चेला बनाने के विषय पर प्रचार करने वाला हूँ, और इसलिए, वास्तव में यह मजेदार होगा।

अतः, मैं उठा और प्रचार किया और अन्त में निमंत्रण दिया लेकिन उन दिन ज्यादा प्रत्युत्तर नहीं मिला। और मुझे याद है जब सभा के समाप्त होने से पहले मैं आगे की पंक्ति के पास खड़ा था और पासबान ने खड़े होकर कहा, "अब विदा होने से पहले मैं कुछ बातें कहना चाहता हूँ।" मैं ने सोचा, "अच्छी बात है, अब ठीक है।"

और वे अपनी बात कहने लगे। और उन्होंने कहा, "डेविड, जैस हमने पिछली रात तुम्हें बताया था, हम उन बातों के बारे में वास्तव में उत्साहित हैं जिन्हें परमेश्वर तुम्हारे जीवन में और तुम्हारे जीवन के द्वारा कर रहा है।" और पूरी कलीसिया के सामने उन्होंने मेरी ओर देखा और कहा, "हम तुम से वायदा करते हैं कि हम तुम्हें चैक भेजते रहेंगे ताकि तुम उन कार्यों को करते रहो और हमें स्वयं जाकर उन्हें करने की जरूरत न पड़े।"

उस समय मेरी पत्नी जो मेरे पीछे खड़ी थी, उसके हाथ को मैं ने अपने कन्धे पर अनुभव किया, वह बता सकती है कि मैं धीरज खोने वाला था। और फिर वह कहता है, "मुझे याद है जब मैं पिछली कलीसिया में सेवा कर रहा था तो जापान से एक मिशनरी हमारे बीच में आए और उन्होंने उन सारी बातों के बारे में बताया जिन्हें परमेश्वर वहाँ कर रहा था। और उस दिन मैं ने अपनी कलीसिया से कहा "यदि तुम इस मिशनरी की सहायता नहीं करोगे तो मैं प्रार्थना करूँगा कि परमेश्वर तुम्हारे बच्चों को उसके साथ कार्य करने के लिए जापान भेज दे।" जैसे कि कोई धमकी हो। और उसने कहा, "हमने उस व्यक्ति को एक लैपटॉप दिया।" उन सारी वस्तुओं का नाम बताया जिसे उन्होंने उस मिशनरी को दिया था और सभा समाप्त हो गई।

हेदर और मैं कार में बैठे और कोई कुछ नहीं बोला; अभी जो हुआ था हम उस पर विश्वास नहीं कर पा रहे थे। मुझे गुस्सा आने लगा और फिर मैं यह सोचने लगा कि उस डीकन और पासबान ने वही बात कही थी जिसे उस अधिकाँश लोग मानते थे लेकिन उनमें उसे खुलकर कहने का साहस नहीं था।

अब, इससे पहले कि आप कहें, "डेव, यह तो कुछ ज्यादा ही हिम्मत है। क्या तुम्हें नहीं लगता कि तुम हम पर कुछ ज्यादा ही कठोर हो?" मैं आप से एक सवाल पूछना चाहता हूँ: हम में से कितने लोग इस तरह से जी रहे हैं कि शहर में यीशु के बिना जीने वाले लोग ठीक हैं? और हम में से कितने लोग इस तरह से जी रहे हैं कि खुद जाकर यह सब करने से चैक देना ठीक है? हम में से कितने लोग वास्तव में प्रार्थना कर रहे हैं? कितने माता–पिता वास्तव में यह प्रार्थना कर रहे हैं कि परमेश्वर आपके बच्चों को उठाए और उन्हें

मध्य–पूर्व में यीशु मसीह के सुसमाचार के प्रचार में अपना जीवन लगाने के लिए भेजे? और हमारी कितनी कलीसियाएँ इस तरह स`चल रही हैं जैसे कि यीशु मसीह का नाम तक न जानने वाले करोड़ों लोग उसके बिना ठीक हैं।

और मैं चाहता हूँ हम एक सवाल पर विचार करें जो मेरे विचार में उन सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्नों में से एक है जिनका यीशु मसीह की कलीसिया आज सामना कर रही है। और मैं चाहता हूँ कि हम ईमानदारी से परमेश्वर के हृदय पर नजर डालें और देखें कि इसका हमारे विशेषतः कलीसिया के जीवन के लिए क्या मतलब है।

आज कलीसिया के सामने एक सबसे महत्वपूर्ण सवाल यह है कि ''उन लोगों का क्या होगा जिन्होंने कभी यीशु के बारे में नहीं सुना है?'' अब, मेरे विचार से यह एक अत्यधिक महत्वपूर्ण प्रश्न है। एक अरब से भी अधिक लोग जिन्होंने कभी यीशु का नाम नहीं सुना है। यीशु का नाम भी नहीं सुना है। एक अरब से अधिक लोग जिन्होंने उसका नाम तक नहीं सुना है। अतः, मेरे विचार से यह अत्यधिक महत्वपूर्ण प्रश्न है और आरम्भ से ही मैं जानता हूँ कि यह भावुकता से भरा प्रश्न है।

यह बहुत बड़ी बात है क्योंकि जब हम डेढ़ अरब से भी अधिक ऐसे लोगों के बारे में सोचते हैं जिन्होंने परमेश्वर का नाम ही नहीं सुना है, तो हम सोचने लगते हैं, ''यदि परमेश्वर प्रेमी है और यदि परमेश्वर अनुग्रहकारी है तो वे लोग निश्चित रूप से नरक में नहीं जाएँगे। उन लोगों का क्या होगा जिन्होंने कभी यीशु के बारे में नहीं सुना है?'' और मुझे पता है कि यह भावुकता से भरा सवाल है। और मैं जानता हूँ कि इस सवाल का उत्तर देना आसान नहीं है। दुर्भाग्यवश, पवित्रशास्त्र में ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ यीशु अपने चेलों से कहते हैं, ''तुम में से कुछ लोग सोच रहे हैं कि उन लोगों का क्या होगा जिन्होंने कभी मेरे बारे में नहीं सुना है। उसका उत्तर यह है।'' सुसमाचारों में यह कहीं भी नहीं है। लेकिन मैं आपको रोमियों की पुस्तक के कुछ वचनों की ओर ले जाना चाहता हूँ जो मेरे विचार से इस सवाल का उत्तर देने में हमारी सहायता कर सकते हैं।

मेरे साथ रोमियों 15 पर आइए। मैं चाहता हूँ इस पुस्तक की पृष्ठभूमि को देखें। रोमियों 15:23. हम इसे पढ़ेंगे और फिर मैं चाहता आप इस बात को सोचें कि पौलुस नामक इस व्यक्ति ने इस पत्री को क्यों लिखा जिस पर हमें पिछले प्रचार के दौरान कुछ समय बिताने का मौका मिला था। 15:23 देखें, पौलुस ने इस पत्री को क्यों लिखा था? देखें क्या लिखा है:

परन्तु अब इन देशों में और जगह नहीं रही, और बहुत वर्षों से मुझे तुम्हारे पास आने की लालसा है। इसलिए जब स्पेन को जाऊँगा तो तुम्हारे पास होता हुआ जाऊँगा क्योंकि मुझे आशा है, कि उस यात्रा में तुम से भेंट करूँ, और जब तुम्हारी संगति से मेरा जी कुछ भर जाए, तो तुम मुझे कुछ दूर आगे पहुँचा दो। परन्तु अभी तो पवित्र लोगों की सेवा करने के लिए यरूशलेम को जाता हूँ। क्योंकि मकिदुनिया और अखया के लोगों को यह अच्छा लगा, कि यरूशलेम के पवित्र लोगों के कंगालों के लिए कुछ चन्दा करें। अच्छा तो लगा, परन्तु वे उन के कर्जदार भी हैं, क्योंकि यदि अन्यजाति उन की आत्मिक बातों में भागी हुए, तो उन्हें भी उचित है, कि शारीरिक बातों में उन की सेवा करें। सो मैं यह काम पूरा करके और उन को यह चन्दा सौंपकर तुम्हारे पास होता हुआ स्पेन को जाऊँगा। और मैं जानता हूँ, कि जब मैं तुम्हारे पास आऊँगा, तो मसीह की पूरी आशीष के साथ आऊँगा। (रोमियों 15:23–29)

यह समझने के लिए हम नये नियम के इतिहास को थोड़ा देखते हैं कि यहाँ क्या हो रहा है। पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा अन्ताकिया नामक नगर की ओर जाती है। प्रेरितों के काम 13 में, पौलुस और उसके साथ बरनबास को अन्ताकिया की कलीसिया द्वारा भेजा जाता है। अन्ताकिया की कलीसिया ऐसी पहली कलीसिया थी जिसने लोगों को बाहर जाने और उन लोगों को सुसमाचार सुनाने के लिए भेजा था, जिन्होंने कभी सुसमाचार नहीं सुना था, और पौलुस जाता है। वे कुप्रुस में जाते हैं और फिर उत्तर की ओर कुछ स्थानों पर जाते हैं और फिर वे वापस लौटते हैं। और आप देखेंगे कि अन्ताकिया से निकलने के बाद वे वापस अन्ताकिया में लौटते हैं। वह उनके लिए एक प्रकार का घर था।

मैं आपको पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा दिखाता हूँ। एक बार फिर, पौलुस अन्ताकिया से निकलता है और उत्तर की ओर यात्रा करता है। परमेश्वर कहता है, "मैं चाहता हूँ तू कुछ ऐसे स्थानों पर जाए जहाँ तू पहले कभी नहीं गया है।" अतः, वे उत्तरी दिशा में और आगे जाते हैं। वे थिस्सलुनीके और एथेन्स और फिर कुरिन्थ में आते हैं। और वे सुदूर दक्षिण–पूर्व में यरूशलेम में आते हैं। और फिर वे कहाँ जाते हैं? वे अन्ताकिया में लौटते हैं। वह उनके लिए घर था। भेजने वाली कलीसिया का घर।

तीसरी मिशनरी यात्रा। आप कभी अनुमान नहीं लगा सकेंगे कि पौलुस कहाँ से शुरू करता है। अन्ताकिया, यही घर है, वह अन्ताकिया से निकलता है और उत्तर में बहुत से स्थानों पर जाता है जहाँ वह पहले जा चुका है और वह कुरिन्थ में आता है। और वही पर वह इस पुस्तक को लिखता है। और वह कहता है,

अभी हमने उसे पढ़ा है, "मैं यरूशलेम को जा रहा हूँ।" लेकिन, क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि इस बार पौलुस किस स्थान पर वापस लौटने की योजना नहीं बनाता है? अन्ताकिया, वह वापस अन्ताकिया में नहीं आता है। वह वापस क्यों नहीं आता है?

अब वह रोम जा रहा है। आप देखेंगे कि पौलुस ने कहा, "मैं कुरिन्थ से यरूशलेम जाऊँगा," और फिर उसने कहा, "मैं रोम में तुम्हारे पास आऊँगा।" लेकिन अभी हमने क्या पढ़ा था? क्या रोम पौलुस का अन्तिम गंतव्य था? नहीं। उसने कहा, "जब मैं तुम्हारे पास आऊँगा तो मैं चाहता हूँ कि आगे की यात्रा में तुम मेरी सहायता करो," कहाँ? स्पेन, बिल्कुल सही। पौलुस वहीं जाना चाहता था। वहाँ के लोगों ने कभी यीशु का नाम नहीं सुना था और पौलुस रोम में रहने वालों को पत्री लिखता है और कहता है, "वहाँ पहुँचने के लिए मुझे तुम्हारी सहायता की जरूरत है।"

आप देखते हैं, मिशन के लिए पौलुस का गृह नगर अन्ताकिया था, लेकिन यदि वह स्पेन जाना चाहता है, तो क्या वहाँ पहुँचने के लिए अन्ताकिया सबसे उपयुक्त स्थान है? नहीं, स्पष्ट है कि आप पश्चिम में जाने के लिए पूर्व दिशा की ओर नहीं जाते हैं। उसने कहा, मुझे रोम की जरूरत है; मैं चाहता हूँ कि तुम उन लोगों तक पहुँचने में मेरी सहायता करो जिन्होंने यीशु का नाम भी नहीं सुना है। मेरा विश्वास है कि इसीलिए पौलुस इस पुस्तक को लिखता है।

पौलुस ने इस पुस्तक को केवल सुसमाचार के व्यवस्थित धर्मविज्ञान के बारे में बताने के लिए नहीं लिखा था। उसने इस पुस्तक को इसलिए लिखा क्योंकि वह इन लोगों को बताना चाहता था कि सुसमाचार कितना महान है ताकि ये लोग स्पेन के मार्ग में उसकी सहायता करने के लिए विवश हो जाएँ।

लगभग आज की तरह ही, मैं जानता कि आपने इन्हें प्राप्त किया है या नहीं, लेकिन लोग मिशन यात्राओं पर जाने से पहले मिशनरी सहायता पत्र भेजते थे और वे कहते, "परमेश्वर ने मुझे विदेश में जाने का एक अवसर दिया है और मैं आपको इसके बारे में बताना चाहता हूँ और मैं चाहता हूँ कि आप मेरे लिए प्रार्थना करें और यदि प्रभु आपको अगुवाई देते हैं तो इस मिशन यात्रा पर जाने के लिए आप आर्थिक रूप से मेरी सहायता करें।" मेरा विचार है कि पौलुस यहाँ पर ऐसा ही पत्र लिख रहा है। यह एक मिशनरी सहायता पत्र है। अब, मैं ने हमारी संस्कृति में कभी इस तरह का मिशनरी सहायता पत्र नहीं देखा है, लेकिन मेरे विचार से पौलुस यही कर रहा है।

अतः, इसके प्रकाश में, इसे दिखाने के पीछे मेरा उद्देश्य आपको यह दिखाना है कि पौलुस इस पुस्तक को इसलिए लिख रहा है ताकि वह रोम में रहने वालों को स्पेन में उन लोगों तक सुसमाचार को लेकर जाने की आवश्यकता के बारे में समझा सके जिन्होंने उसे पहले कभी नहीं सुना है। और इसके फलस्वरूप, जब इस सवाल की बात आती है कि उन लोगों का क्या होगा जिन्होंने कभी यीशु के बारे में नहीं सुना है, तो मेरे विचार से इस पुस्तक के आशय बहुत विशाल हैं।

सात पुष्टियाँ

अब, इस पुस्तक में भी ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ मैं आपको दिखा सकूँ उन लोगों का क्या होगा जिन्होंने कभी यीशु के बारे में नहीं सुना है, इसके विपरीत, मैं आपको सात पुष्टियाँ; सात सत्य देना चाहता हूँ, जो मेरे विचार से इस प्रश्न के उत्तर में सहायता करेंगे। सात सत्य, और मैं चाहता हूँ कि आप रोमियों की पुस्तक में देखें।

अतः, मेरे साथ शुरू करें और रोमियों की पुस्तक में पहले अध्याय पर आएँ। रोमियों 1, हम पद 18 से आरम्भ करेंगे, जहाँ वास्तव में पौलुस अपनी इस चर्चा को आरम्भ करता है कि इन लोगों को सुसमाचार को सुनने की आवश्यकता क्यों है। रोमियों 1:18. देखें बाइबल वहाँ क्या कहती है और फिर सोचें कि उन लोगों का क्या होगा जिन्होंने कभी यीशु के बारे में नहीं सुना है।

हम कुछ अलग–अलग परिच्छेदों को पढ़ने जा रहे हैं। कुछ में से हम तेजी से आगे बढ़ेंगे और कुछ पर थोड़ा समय व्यतीत करेंगे। मैं चाहता हूँ आप मेरे साथ बने रहें और पूरा ध्यान दें क्योंकि कुछ ऐसे बिन्दू हैं जहाँ मुझे गलत समझ सकते हैं और मुझ पर गलत उपदेशक होने का ठप्पा लगा सकते हैं और मैं नहीं चाहता कि ऐसा हो, इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप सावधानी से सुनें। ठीक है? और आशा है कि हम झूठे उपदेशक नहीं बनेंगे।

रोमियों 1:18, पौलुस कहता है,

> *परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रकट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं। इसलिए कि परमेश्वर के विषय में ज्ञान उन के मनों में प्रकट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रकट किया है। क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात्*

उस की सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहाँ तक कि वे निरूत्तर हैं। (रोमियों 1:18–21)

सब लोग पिता परमेश्वर को जानते हैं।

पहली पुष्टि, सब लोग पिता परमेश्वर को जानते हैं, सम्पूर्ण इतिहास के सारे लोग पिता परमेश्वर को जानते हैं। सब लोग। चाहे आप हैं, मैं हूँ, अफ्रीका के जंगल में रहने वाला कोई व्यक्ति है, एशिया के किसी गाँव में रहने वाला व्यक्ति है, या इन स्थानों के बीच में कहीं रहने वाला व्यक्ति है, सारे लोगों को परमेश्वर की जानकारी है। बाइबल कहती है, इसे निरन्तर प्रकट किया जा रहा है। परमेश्वर का क्रोध, परमेश्वर का चरित्र मनुष्यों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रकट हो रहा है। वह कहता है, यह बात सृष्टि द्वारा प्रकट की जा रही है। हम जानते हैं कि परमेश्वर का अस्तित्व है क्योंकि जब हम सृष्टि को देखते हैं तो हम अपने चारों ओर उसके हाथों के कार्यों को देखते हैं, और देख सकते हैं कि यह सब अपने आप ही उत्पन्न नहीं हुआ है। इसके पीछे एक परमेश्वर है। वह सृष्टि के द्वारा निरन्तर अपने चरित्र को प्रकट करता है। मैं चाहता हूँ आप देखें कि पौलुस कहता है, "यह स्पष्ट है। साफ दिखाई देता है।" इसमें कोई सन्देह नहीं है। लोगों को पता है।

निरन्तर सृष्टि द्वारा प्रकट किया जा रहा है, यह स्पष्ट है और यह पर्याप्त है, इसलिए मनुष्यों के पास कोई बहाना नहीं है, हम में से हर एक व्यक्ति के लिए, परमेश्वर अपने चरित्र को हमारे साथ–साथ अफ्रीका के जंगल में रहने वाले व्यक्ति के लिए भी सृष्टि के द्वारा, निरन्तर, स्पष्ट रूप से प्रकट कर रहा है कि हमारे पास कोई बहाना न रहे। हम सबके पास पिता परमेश्वर को जानने का अवसर है, सब लोग पिता परमेश्वर को जानते हैं, सुनने में अच्छा लगता है? हम सब एक ही पृष्ठ पर हैं? ठीक है, हम आगे बढ़ते हैं।

सब लोग परमेश्वर के सत्य ज्ञान को अस्वीकार कर देते हैं।

दूसरी पुष्टि, सब लोग परमेश्वर के सत्य ज्ञान को अस्वीकार कर देते हैं। देखिए पद 21 से 23 में क्या लिखा है। *"इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्हों ने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहाँ तक कि उन का निर्बुद्धि मन अन्धेरा हो गया। वे अपने आप को बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए। और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगने वाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला।"* (रोमियों 1:21–23) दूसरे शब्दों में, उन्होंने परमेश्वर के सत्य ज्ञान को अस्वीकार कर दिया और स्वयं द्वारा बनाई गई मूरतों एवं तस्वीरों की उपासना करने लगे।

अब, यह केवल पौलुस के समय लोगों की ही बात नहीं कर रहा है। अब, यह एक मूलभूत बिन्दू है, लेकिन इस बिन्दू को हम अक्सर गलत समझ लेते हैं जब यह बात आती है कि उन लोगों का क्या होगा जिन्होंने कभी यीशु के बारे में नहीं सुना है।

मुझे एक सम्मेलन में कुछ कॉलेज विद्यार्थियों से हुई बातचीत याद है और हम इसी विषय पर बात कर रहे थे। मेज की दूसरी तरफ एक लड़की बैठी थी और उसने मुझ से कहा, "उन लोगों के बारे में आप क्या कहेंगे जो अपनी जानकारी के अनुसार अपना सर्वोत्तम कर रहे हैं।" उसने कहा, "उदाहरण के लिए, जो भारतीय लोग इस देश में आते हैं। वे यहाँ आए, उनके पास बाइबल नहीं थी, उन्होंने यीशु के बारे में नहीं सुना था और वे सूर्य देवता की उपासना करते थे। क्या आपको नहीं लगता कि वे अपनी जानकारी के अनुसार सर्वोत्तम कार्य कर रहे थे। क्या आपको नहीं लगता कि इससे परमेश्वर को सम्मान मिलता है? क्या वे लोग धार्मिक नहीं हैं?" अभी हमने पौलुस के वचनों में से जो पढ़ा है, उसके आधार पर, मैं चाहता हूँ कि आप इसके बारे में सोचें।

<u>क्या वे धार्मिक नहीं हैं? नहीं, वे मूर्तिपूजक हैं।</u> वे मूर्तिपूजक हैं; हम मूर्तिपूजक हैं। हम परमेश्वर की तस्वीरों को बनाकर और उनकी उपासना करके यह अपेक्षा नहीं कर सकते हैं कि एक पवित्र परमेश्वर जो हमारी सारी स्तुति के योग्य है, वह इससे सम्मानित और प्रसन्न होगा।

यह मूर्तिपूजा का सार है और हम सब इसके दोषी हैं। चाहे हम स्वयं हों, हमारी नौकरी हो, हमारा पेशा हो, हमारे घर, हमारी संपत्तियाँ या हमारे जीवन की कोई भी बात हो। हम उन्हें ऊँचा स्थान देते हैं और उनकी उपासना करने लगते हैं। यह मूर्तिपूजा है, यह उस आराधना को लेकर किसी और को देता है, जिसके योग्य केवल परमेश्वर है। और चाहे सूर्य देवता की उपासना करना हो या अपने निवेश की योजना की, दोनों ही मूर्तिपूजा है। हम में से हर एक व्यक्ति ने और साथ ही अफ्रीका, एशिया और पूरे संसार के सारे लोगों ने परमेश्वर के सत्य ज्ञान को अस्वीकार कर दिया है।

संसार में कोई निर्दोष व्यक्ति नहीं है।

तीसरी पुष्टि, इसके आधार पर हम कह सकते हैं कि <u>संसार में कोई निर्दोष व्यक्ति नहीं है।</u> आप देखते हैं, पौलुस रोमियों 1:18 से लेकर रोमियों 2:16 तक क्या करता है, पौलुस लोगों के एक समूह के बारे में बात करता है जो अन्यजाति कहलाते हैं। ये गैर–यहूदी, दूसरी जातियों के लोग हैं। और आप अपनी आँखों सामने इसे देख सकते हैं कि जब पौलुस बताता है कि वे कितने दुष्ट हैं, तो आप इस पत्री को पढ़ने वाले

यहूदी पाठकों को हर एक परिच्छेद पर आमीन कहते हुए देख सकते हैं, "हाँ, उन्हें देखो तो, वे लोग कितने बुरे हैं।"

और फिर हम देखते हैं, यह बहुत ही रूचिकर है, 2:17 में एक बड़ा बदलाव आता है, पौलुस इस पुस्तक को पढ़ने वाले यहूदियों से कहता है, जो यह सुनकर आमीन कह रहे हैं कि अन्यजाति लोग कितने दुष्ट हैं, वह कहता है, "अब तुम, यदि व्यवस्था पर भरोसा रखते हो, परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते के बारे में शेखी बघारते हो।" वह उन लोगों के बारे में बात करने लगता है, जो यहूदी हैं, क्या तुम परमेश्वर की इच्छा को जानते हो और जो श्रेष्ठ है उसी को मान्यता देते हो क्योंकि तुम्हें व्यवस्था की शिक्षा दी गई है, और वह कहने लगता है, यद्यपि अन्यजाति परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते हैं लेकिन तुम दोनों एक ही नाव पर सवार हो। इस संसार में कोई निर्दोष नहीं है।

और इसीलिए, अध्याय तीन के मध्य में आने पर पौलुस कहता है, "कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। कोई समझदार नहीं, कोई परमेश्वर का खोजने वाला नहीं। सब भटक गए हैं, सब के सब निकम्मे बन गए, कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं।" (रोमियों 3:10—12) संसार में कोई निर्दोष नहीं है।

अब, यदि इस बिन्दू पर तुम मुझ से पूछते,"डेविड, ईमानदारी से बताओ। अफ्रीका में रहने वाले उस निर्दोष व्यक्ति का क्या होगा जिसने पहले कभी सुसमाचार नहीं सुना है?" मैं आपकी ओर देखकर कहता, बिना किसी सन्देह के, मेरा विश्वास है कि इसका उत्तर यह होगा कि वह व्यक्ति स्वर्ग में जाएगा।" "एशिया में रहने वाले उस निर्दोष व्यक्ति का क्या होगा जिसने पहले कभी सुसमाचार नहीं सुना है?" पूरे दिल से मेरा विश्वास है कि वह व्यक्ति स्वर्ग में जाएगा।

अब, इससे पहले कि आप मुझ पर झूठे उपदेशक का ठप्पा लगाएँ और यह सोचने लगे कि यह व्यक्ति क्या कह रहा है, तो मैं आप को याद दिलाना चाहता हूँ कि यदि अफ्रीका या एशिया में कोई निर्दोष व्यक्ति है, जिसने पहले कभी सुसमाचार नहीं सुना है, यदि वह निर्दोष है, तो उसे मुक्तिदाता की कोई जरूरत नहीं है। उसने कुछ भी गलत नहीं किया है तो वह परमेश्वर से अलग क्यों किया जाएगा? वह परमेश्वर से अलग नहीं है। उसका परमेश्वर के साथ संबंध है और उसे मसीह के लहू के द्वारा उद्धार पाने की जरूरत नहीं है, केवल एक ही समस्या है, कि उसका कोई अस्तित्व नहीं है।

कृपया मुझे ध्यान से सुनें, सवाल अक्सर इस प्रकार से पूछा जाता है। "प्रचारक, अफ्रीका के उस निर्दोष व्यक्ति का क्या होगा जिसने पहले कभी सुसमाचार नहीं सुना है?" हम शुरूआत से ही प्रश्न को उस व्यक्ति के पक्ष में झुका देते हैं जिसने "कभी कुछ गलत नहीं किया है," जो जंगल के बीच में है और यह सत्य नहीं है, चाहे अफ्रीका के जंगल में रहने वाला व्यक्ति हो या एशिया में या हम में से कोई एक, हम में से हर एक ने परमेश्वर के सत्य ज्ञान को अस्वीकार कर दिया है। और हम निर्दोष नहीं हैं।

मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि हमें यह विचार हमारी संस्कृति से मिला है। हम यह सोचते हैं कि स्वर्ग पहले से निर्धारित है लेकिन यह बाइबल के अनुसार नहीं है। स्वर्ग पहले से निर्धारित नहीं है। नरक पहले से निर्धारित है। हमने परमेश्वर के विरूद्ध पाप किया है और हम हमेशा के लिए उससे अलग किए जाने के योग्य हैं।

इसलिए, हाँ, एक निर्दोष व्यक्ति को मुक्तिदाता की जरूरत नहीं होगी। समस्या यह है कि संसार में निर्दोष लोग नहीं हैं, और न ही कोई निर्दोष व्यक्ति है। संसार में कहीं भी नही। सही है? क्या हमारे विचार मिलते हैं?

सब लोग परमेश्वर को अस्वीकार करने के लिए दोषी हैं।

चौथी पुष्टि। <u>सब लोग परमेश्वर को अस्वीकार करने के लिए दोषी हैं।</u> मैं चाहता हूँ आप देखें कि पौलुस के तर्क के अन्त में, जब आप रोमियों 3:19–20 पर आते हैं, वह कुछ अत्यधिक महत्वपूर्ण वचनों को कहता है और मैं चाहता हूँ आप मेरे साथ उन्हें देखें।

वह कहता है, *"हम जानते हैं, कि व्यवस्था जो कुछ कहती है उन्हीं से कहती है, जो व्यवस्था के आधीन हैं: इसलिए कि हर एक मुँह बन्द किया जाए, और सारा संसार परमेश्वर के दण्ड के योग्य ठहरे। क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा, इसलिए कि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती है।"* (रोमियों 3:19–20) वह कह रहा है कि हम सब परमेश्वर के सामने हमारे जीवन के पाप के साथ खड़े हैं, इसलिए, हम सबने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया है। हम उसके सामने हमारे पाप के लिए जवाबदेह हैं। और हम उससे अलग होने के योग्य हैं। परमेश्वर को अस्वीकार करने के कारण सब लोग दोषी हैं।

अब, यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है और मैं चाहता हूँ एक पल के लिए आप मेरे साथ इसके बारे में सोचें। कुछ लोग कहेंगे, और मेरे विचार से यह एक वैध सवाल है, "किसी दूसरे स्थान पर रहने वाले उस व्यक्ति का क्या होगा जिसने पहले कभी सुसमाचार नहीं सुना है? यीशु का नाम नहीं सुना है, क्या प्रेमी और अनुग्रहकारी परमेश्वर, वास्तव में यीशु को अस्वीकार करने के कारण उस व्यक्ति को नरक में भेज देगा, जबकि सच तो यह है कि उन्हें कभी यीशु के बारे में सुनने का मौका ही नहीं मिला?"

इसके बारे में सोचें। क्या आपको लगता है कि यह प्रेमपूर्ण होगा? क्या आपको लगता है कि यीशु को अस्वीकार करने के कारण किसी ऐसे व्यक्ति को नरक में भेजकर परमेश्वर न्याय कर रहा है जिसे कभी यीशु के बारे में सुनने का अवसर ही नहीं मिला, लेकिन इस परिच्छेद के बिन्दू से न चूकें, सारे लोग अब भी दोषी हैं, किसे अस्वीकार करने के कारण? परमेश्वर को अस्वीकार करने के कारण।

हम यह सोचने लगते हैं, "यदि उन्होंने यीशु के बारे में नहीं सुना है तो निश्चित रूप से किसी न किसी तरह वे इससे पार हो जाएँगे। यदि उन्होंने यीशु के बारे में नहीं सुना है तो निश्चित रूप से उस बात के लिए जवाबदेह नहीं हैं, जिसके हम जवाबदेह हैं।" और स्पष्टतः, हाँ, उनकी जानकारी अलग स्तर की है, उन्होंने यीशु का नाम नहीं सुना है, लेकिन मैं चाहता हूँ आप मेरे साथ इसके बारे में सोचें। इसके परिणाम क्या होंगे? यदि कोई व्यक्ति केवल इसी कारण योग्य हो जाता है कि उसने यीशु के बारे में नहीं सुना है, तो मैं चाहता हूँ आप सोचें कि यह किस प्रकार कलीसिया के मिशनरी उद्यम को बाधित करेगा। मेरे साथ इसके बारे में सोचें।

यदि अफ्रीका में जंगल में रहने वाले लोग ठीक हैं और स्वर्ग की ओर जा रहे हैं, केवल इस कारण कि उन्होंने यीशु का नाम नहीं सुना है, तो यह सबसे बुरी बात है कि हम जाकर उन्हें यीशु के बारे में बताते हैं, क्या यह सही नहीं है? क्योंकि जब हम ऐसा करते हैं, तो हम उनके दोषी ठहरने के अवसरों को बढ़ा देते हैं।

व्यवहारिक रूप से इसके बारे में सोचें। यदि आप विश्वास करते हैं कि वे लोग ठीक हैं, वे योग्य हैं क्योंकि उन्होंने यीशु का नाम नहीं सुना है। तो सोचें कि इसके व्यवहारिक परिणाम क्या होंगे।

अपने शहर के बारे में सोच कर देखें। कल्पना करें कि आप किसी कॉलेज परिसर में जाते हैं। और उस परिसर में किसी छात्र से पूछते हैं, क्या तुमने कभी यीशु के बारे में सुना है, और वह आपकी ओर देखकर कहता है, "नहीं, मैं ने कभी यीशु के बारे में नहीं सुना है।"

अब, यदि उस व्यक्ति को केवल इस कारण मुफ्त में योग्यता मिलती है कि उसने यीशु के बारे में नहीं सुना है, तो उस परिस्थिति में आप क्या करेंगे? आप उन्हें एक ओर खींचकर कहेंगे, "ठीक है, यदि कोई आकर तुम्हें उसके बारे में बताने की कोशिश करता है, तो तुरन्त अपने कानों में अंगुली डाल लेना और जोर से चिल्लाते हुए भाग जाना।" क्योंकि उसके कारण तुम्हारे नरक में जाने की संभावना बढ़ जाएगी।

अब, हम जानते हैं कि यह धर्मशास्त्रीय नहीं है। हम जानते हैं कि यह धर्मशास्त्रीय नहीं है। हम जानते हैं कि पूरे पवित्रशास्त्र में हम पृथ्वी की छोर तक इस सुसमाचार को लेकर जाने की बात को देखते हैं। परमेश्वर को अस्वीकार करने के कारण सारे लोग दोषी हैं। और इसके परिणामस्वरूप, हमें उन तक सुसमाचार को लेकर जाने की जरूरत है।

परमेश्वर ने खोए हुओं के लिए उद्धार का मार्ग तैयार किया है।

आइए हम पाँचवीं पुष्टि की ओर चलते हैं। मेरे साथ चलते रहें। पाँचवीं पुष्टि। संसार में कोई निर्दोष नहीं है। परमेश्वर को अस्वीकार करने के कारण सब लोग दोषी हैं। मैं कृतज्ञ हूँ कि रोमियों नामक इस पुस्तक में एक मोड़ आता है। पाँचवीं पुष्टि, परमेश्वर ने खोए हुओं के लिए उद्धार का मार्ग तैयार किया है।

सम्पूर्ण रोमियों की पुस्तक में यह मेरे पसन्दीदा बिन्दुओं में से एक है। जब आप पौलुस को अन्त की ओर आते हुए देखते हैं तो वह कहता है, "हम जानते हैं कि व्यवस्था जो कुछ कहती है वह केवल उनसे कहती है, जो व्यवस्था के अधीन हैं और हर एक मुँह बन्द किया जाएगा और परमेश्वर के सामने जवाबदेह ठहराया जाएगा।" मैं कल्पना में पौलुस को देख सकता हूँ, चाहे वह इसे लिख रहा हो या बोलकर बता रहा हो, उसकी आँखों में आँसू भरे हैं। उसकी दृष्टि में व्यवस्था का पालन करने में कोई धर्मी नहीं ठहरता है।

फिर वह कलम उठाता है, अपने आँसुओं को पोंछता है और कहता है, *"पर अब बिना व्यवस्था परमेश्वर की धार्मिकता प्रकट हुई है, जिस की गवाही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता देते हैं। अर्थात् परमेश्वर की वह धार्मिकता, जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करने वालों के लिए है।"* (रोमियों 3:21–22) सारे लोगों सहित हम भी परमेश्वर को अस्वीकार करने के कारण दोषी हैं, लेकिन परमेश्वर का धन्यवाद हो

कि वह हमें वहीं नहीं छोड़ता है। उसने आपके और मेरे लिए उद्धार का एक मार्ग तैयार किया है। उसने सम्पूर्ण इतिहास के हर एक व्यक्ति के लिए, आज इस ग्रह पर रहने वाले हर एक व्यक्ति के लिए, आज संसार में रहने वाले छह अरब लोगों के लिए उद्धार का मार्ग तैयार किया है, परमेश्वर ने कहा, मैं ने खोए हुओं के लिए उद्धार का मार्ग तैयार किया है, और यह धर्म की इस पर्वतीय अवधारणा के बिल्कुल विपरीत है, जो कहती है कि परमेश्वर की ओर जाने वाले मार्ग को हमें स्वयं खोजना है। हमें परमेश्वर तक जाने के लिए अपना मार्ग स्वयं तैयार करना है। परमेश्वर पर्वत के शिखर पर, हम पर्वत के नीचे हम ऊपर चढ़ने की कोशिश करते हुए, नहीं, उन सबके विपरीत, परमेश्वर कहता है, मैं तुम्हारे लिए पर्वत से नीचे उतर आया हूँ, मैं ने तुम्हारे लिए उद्धार का मार्ग तैयार किया है।"

और हमारी संस्कृति में सवाल निश्चित रूप से यह नहीं है कि, "एक से अधिक मार्ग क्यों नहीं हैं? केवल एक ही मार्ग क्यों है?" जब आप रोमियों की पुस्तक की पृष्ठभूमि को महसूस करते हैं तो सवाल यह है कि, मार्ग की जरूरत ही क्या है? हम उस अनुग्रह और करूणा के सौभाग्य के योग्य नहीं हैं जिसे परमेश्वर ने अपने पुत्र मसीह में उण्डेला है, लेकिन उसने ऐसा किया है। उसने आपके लिए यह किया है। उसने मेरे लिए यह किया है। उसने अफ्रीका और एशिया और उनके बीच के स्थानों में रहने वाले लोगों के लिए यह किया है, उसने खोए हुओं के लिए उद्धार का मार्ग तैयार किया है। यही सुसमाचार है। रोमियों 3:21–26. उस परिच्छेद को कंठस्थ करें। इसे अपने अन्दर सोख लें। परमेश्वर ने यीशु को प्रायश्चित के बलिदान के रूप में प्रस्तुत किया है। उसने उसका लहू बहाया ताकि आप दोषी न ठहरें। ताकि बाद में रोमियों 8 में आप कह सकें, कि अब कोई दण्ड नहीं है। परमेश्वर ने खोए हुओं के लिए उद्धार का मार्ग तैयार किया है।

मसीह के अलावा लोग परमेश्वर के पास नहीं आ सकते हैं।

छठी पुष्टि, मसीह के अलावा लोग परमेश्वर के पास नहीं आ सकते हैं। अब, एक पल के लिए उसे सोख लें। यदि आप रोमियों 3:27–31 में देखते हैं, तो आप देखेंगे पौलुस घमण्ड के बारे में बात करना आरम्भ करता है। और वह कहता है, *"उस (घमण्ड) की तो जगह ही नहीं: कौन सी व्यवस्था के कारण से? क्या कर्मों की व्यवस्था से? नहीं, वरन् विश्वास की व्यवस्था के कारण।"* (रोमियों 3:27) अब इस पद को देखें, पद 28, *"इसलिए हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं, कि मनुष्य व्यवस्था के कामों के बिना विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है।"* (रोमियों 3:28)

अतः, हम परमेश्वर के सामने धर्मी नहीं हैं। हम अपने कार्यों के द्वारा, व्यवस्था का पालन करने के द्वारा हमारे पापों से उद्धार नहीं पाते हैं। नहीं, हम विश्वास से उद्धार पाते हैं। किस पर विश्वास से? विश्वास के

लिए हमेशा कोई आधार होना चाहिए, आप विश्वास को बनाकर विश्वास नहीं रख सकते हैं। विश्वास का किसी न किसी बात पर टिका होना जरूरी है। और यही उसने अभी कहा है और उसके बाद वह उसके आधार पर आगे बढ़ता है, और वह मसीह में विश्वास है। यह क्रूस पर मसीह के कार्य और मृतकों में से उसके पुनरूत्थान पर विश्वास है, परन्तु इस प्रकार के विश्वास के अलावा, चाहे आप कितने भी अच्छे हों, चाहे आप कितने भी नैतिक हों, चाहे आप कितना कुछ भी क्यों न करें, आप परमेश्वर के पास नहीं आ सकते हैं, मसीह पर विश्वास के अलावा लोग परमेश्वर के पास नहीं आ सकते हैं।

और जब इसके बारे में सोचते हैं कि उन लोगों का क्या होगा जिन्होंने कभी यीशु के बारे में नहीं सुना है, यह एक बहुत ही बड़ा सवाल है। जब हम इस सवाल को सुनते हैं तो हम सोचने लगते हैं, "शायद, परमेश्वर कोई और मार्ग निकालेगा। यदि एक अरब से अधिक लोगों ने यीशु के नाम को नहीं सुना है, तो शायद, शायद परमेश्वर ने उन्हें मसीह के अलावा अपने पास लाने के लिए कोई और मार्ग निकाला है। यदि परमेश्वर अनुग्रहकारी और प्रेमी है, तो निश्चित रूप से वह दूसरा मार्ग निकालेगा।"

और यह एक वास्तविक सवाल है और यह सवाल जूझन के योग्य है, लेकिन मैं चाहता हूँ आप इसके बारे में सोचें, जब आप इस सवाल से जूझते हैं। इस बिन्दू पर आते ही और यह आज पूरी कलीसिया में हो रहा है... इस बिन्दू पर आते ही हम कहते हैं, "शायद, परमेश्वर कोई दूसरा मार्ग निकालेगा।" फिर हम क्रूस पर यीशु की ओर देखकर कहते हैं, "आपने जो किया उसके लिए धन्यवाद, लेकिन यह जरूरी नहीं था, हम दूसरा मार्ग निकाल सकते थे।"

यह एक खतरनाक बिन्दू है। मैं चाहता हूँ आप देखें कि इस प्रश्न का हमारा उत्तर क्रूस की पूरी अनिवार्यता को हवा में उछाल सकता है। क्योंकि बात यह है, यदि मसीह के अलावा वे परमेश्वर के पास आ सकते, तो मसीह क्रूस पर क्यों मरा? यदि कोई यह सोच रहा है कि, "जिन लोगों ने यीशु का नाम नहीं सुना है वे किसी दूसरे तरीके से परमेश्वर के पास आ सकते हैं, तो हम यह कह रहे हैं, कि मसीह, तुम्हारी मृत्यु की कोई जरूरत नहीं थी। मसीह, आपने जो किया उसके लिए धन्यवाद, हम स्वयं कोई दूसरा रास्ता निकाल सकते थे।" यह प्रश्न धर्मविज्ञानी रूप इतना महत्वपूर्ण है कि हमें हमारे विश्वास के परिणामों का अहसास होता है।

एक पल के लिए हमारे पास खुशखबरी थी, लेकिन फिर से सब कुछ निराशाजनक और उजाड़ हो गया है, क्योंकि यदि मसीह पर विश्वास किए बिना लोग परमेश्वर के पास नहीं आ सकते हैं तो अब भी एक अरब

से अधिक ऐसे लोग हैं जिन्होंने यीशु का नाम नहीं सुना है, और यहीं पर हम हमारी अन्तिम पुष्टि पर आते हैं।

मसीह कलीसिया को सारी जातियों में सुसमाचार का प्रचार करने की आज्ञा देता है।

सातवीं पुष्टि, मसीह कलीसिया से आह्वान नहीं करता बल्कि कलीसिया को आज्ञा देता है, मसीह कलीसिया को सारी जातियों में सुसमाचार का प्रचार करने की आज्ञा देता है। मैं चाहता हूँ आप मेर साथ रोमियों 10 में इसे देखें। मेरे साथ वहाँ चलें। हम इन 5 से 15 तक के इन सारे वचनों को नहीं पढ़ेंगे, मैं आपको इसके थोड़े सन्दर्भ की जानकारी देता हूँ।

पौलुस बता रहा है कि किस प्रकार मसीह पर विश्वास ने, यीशु पर विश्वास ने परमेश्वर पर विश्वास का स्थान ले लिया है। यानि, जब आप मसीह पर विश्वास करते हैं, तो आप परमेश्वर पर विश्वास करते हैं और उसी से आप का उद्धार होता है।

अब, मैं चाहता हूँ आप मेरे साथ पद 12 पर आएँ। और मैं चाहता हूँ आप देखें कि पौलुस क्या कहता है। याद रखें, मसीह कलीसिया को सारी जातियों में सुसमाचार का प्रचार करने की आज्ञा देता है। रोमियों 10:12, *"यहूदियों और यूनानियों में कुछ भेद नहीं, इसलिए कि वह सब का प्रभु है; और अपने सब नाम लेने वालों के लिए उदार है। क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा। फिर जिस पर उन्हों ने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम क्योंकर लें? और जिसकी नहीं सुनी उस पर क्योंकर विश्वास करें? और प्रचारक बिना क्योंकर सुनें? और यदि भेजे न जाएँ, तो क्योंकर प्रचार करें? जैसा लिखा है, कि उन के पाँव क्या ही सुहावने हैं, जो अच्छी बातों का सुसमाचार सुनाते हैं।"* (रोमियों 10:12–15)

अब, पौलुस यहाँ पर एक गम्भीर सवाल पूछता है। "वे उसे कैसे पुकार सकते हैं, जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया है? और कैसे विश्वास कर सकते हैं यदि उन्होंने सुना नहीं है, और कैसे सुन सकते हैं जब तक कि कोई प्रचार न करे और प्रचार कैसे करें जब तक कि उन्हें भेजा न जाए।" इन सवालों में, पौलुस सुसमाचार को सारी जातियों में फैलाने की परमेश्वर की योजना का वर्णन कर रहा है। यही मिशन है। यही वह मिशन है जिसे रोका नहीं जा सकता है। पूरे पवित्रशास्त्र में, परमेश्वर अपने सुसमाचार को, अपनी भलाई को, अपनी महानता को सारे लोगों के बीच में फैलाता है।

लेकिन मैं यह पूछना चाहता हूँ कि इस मिशन में खराबी कहाँ है? इस मिशन में खराबी कहाँ है? और इस सवाल को पूछने के लिए मैं चाहता हूँ कि आप इस परिच्छेद को पीछे से आगे की ओर पढ़ें, जिसे हमने अभी पढ़ा है। और मैं चाहता हूँ कि आप परमेश्वर की योजना के बारे में सोचें।

आइए हम इस परिच्छेद के अन्त से लेकर आरम्भ तक क्रिया शब्दों को देखते हैं, और मुझे लगता है कि हमें इसकी एक तस्वीर मिल जाएगी कि सारी जातियों में सुसमाचार को फैलाने के बारे में परमेश्वर की योजना क्या है। अन्त में यह परिच्छेद क्या कहता है? पद 15, *"यदि भेजे न जाएँ, तो क्योंकर प्रचार करें?"* यहीं से इसकी शुरूआत होती है, मसीह अपने सेवकों को भेजता है। यहीं पर योजना की शुरूआत होती है। मसीह सुसमाचार का प्रचार करने के लिए लोगों को, सेवकों को, आपको और मुझे भेज रहा है। अतः, मसीह अपने दासों को भेजता है।

और वहाँ लिखा है, *"यदि भेजे न जाएँ, तो क्योंकर प्रचार करें?"* अतः, मसीह जब सेवकों को भेजता है, तो सेवक क्या करते हैं? वे प्रचार करते हैं। अब, यह केवल उन व्यक्तियों के लिए नहीं है जो मंच पर या पूरे समूह के सामने खड़े होते हैं, नये नियम के इस शब्द का अर्थ है सुसमाचार की घोषणा करना। यह शब्द हम सब पर लागू होता है, जिनका मसीह के साथ संबंध है। केवल पेशेवर प्रचारकों के लिए ही नहीं, यह हम सबके लिए है। मसीह सेवकों को भेजता है और सेवक क्या करते हैं? अच्छा जीवन बिताते हैं? अच्छे लोग बनते हैं? हाँ, ये सारी बातें हैं, लेकिन वे प्रचार करते हैं। वे सुसमाचार को बाँटते हैं, मौखिक रूप से सुसमाचार की घोषणा करते हैं।

जब उसके सेवक प्रचार करते हैं तो क्या होता है? वहाँ क्या लिखा है? *"प्रचारक बिना क्योंकर सुनें?"* अतः, स्पष्ट है, जब मसीह सेवकों को भेजता है तो सेवक प्रचार करते हैं, लोग सुनते हैं। लोग सुसमाचार सुनने लगते हैं। उनमें से बहुत से लोग पहली बार सुनते हैं।

और उससे पहले बाइबल क्या कहती है? *"और जिसकी नहीं सुनी उस पर क्योंकर विश्वास करें?"* इससे न चूकें, जब मसीह सेवकों को भेजता है और वे सेवक प्रचार करते हैं और लोग सुनते हैं, तो सुनने वाले बहुत से लोग विश्वास करेंगे। अब, स्पष्ट है कि सुनने वाले सब लोग नहीं, परन्तु मेरा विश्वास है कि यह पवित्रशास्त्र का एक वायदा है। आप हान के पास जाएँ, आप बंगाली के पास जाएँ, मैं आपको गारण्टी देता हूँ, पवित्रशास्त्र के अधिकार के आधार पर मेरा विश्वास है कि जब हम मसीह के वचन को उन्हें सुनाते हैं,

जब हम सुसमाचार को सुनाते हैं तो वहाँ ऐसे लोग होंगे जो सुनकर विश्वास करेंगे। और वे इस सन्देश को गले लगाएँगे क्योंकि इसे रोका नहीं जा सकता है।

क्योंकि हम जानते हैं कि सम्पूर्ण अनन्तता उस दिन की ओर बढ़ रही है जब हर एक जाति और हर एक गोत्र और हर एक भाषा में से हर एक घुटना टिकेगा और हर एक जीभ अंगीकार करेगी और वे मसीह की स्तुति करेंगे। भाइयो और बहनो, धीरज रखो, आप लोगों के पास जाइए और सुसमाचार सुनाइए, और सुनने वाले बहुत से लोग विश्वास करेंगे।

जब वे विश्वास करते हैं तो क्या होता है, वे क्या करेंगे? *"जिस पर उन्हों ने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम क्योंकर लें?"* जब वे विश्वास करते हैं, तो वे पुकारते हैं। अतः, प्रगति यहाँ है, मसीह और सेवक, सेवक प्रचार करते हैं। जब वे प्रचार करते हैं, लोग सुनते हैं। जब वे सुनते हैं, वे विश्वास करते हैं। जब वे विश्वास करते हैं, वे पुकारते हैं। विश्वास करने वाले लोग प्रभु का नाम लेंगे और गारण्टी यह है कि पूरे संसार में प्रभु का नाम लेने वाले हर एक व्यक्ति के लिए क्या होगा? वह बचाया जाएगा। वह बचाया जाएगा।

मसीह सेवकों को भेजता है जो सुसमाचार का प्रचार करते हैं और जब वे प्रचार करते हैं तो लोग सुनते हैं। जब वे सुनते हैं तो वे विश्वास करते हैं। जब विश्वास करने वाले नाम लेते हैं तो वे बचाए जाएँगे, निश्चित है, यही रूपरेखा है। यही सारी जातियों में सुसमाचार को फैलाने के लिए परमेश्वर की योजना है। अब, सवाल यह है कि इस मिशन में खराबी कहाँ है?

मेरे साथ इसके बारे में सोचें। क्या खराबी यहाँ है कि जब वे नाम लेते हैं तो वे उद्धार पाएँगे? हाँ, कोई शक नहीं, इसकी गारण्टी है। कोई शक नहीं कि जब वे विश्वास करते हैं तो वे नाम लेंगे। जब वे सुनते हैं, तो कोई शक नहीं कि उनमें से बहुत से लोग मसीह पर विश्वास करेंगे। जब हम प्रचार करते हैं, जब तक कि हम एक कमरे अकेले खड़े होकर प्रचार न करें, जिसका कोई मतलब नहीं है, तो लोग सुनेंगे। जब हम प्रचार करते हैं तो लोग सुनेंगे। और निःसन्देह, मसीह अपने सेवकों को भेज रहा है। तो खराबी कहाँ है?

जब वे सेवक जिन्हें यीशु मसीह का सुसमाचार सौंपा गया है, सारी जातियों में इस सुसमाचार का प्रचार करने में असफल हो जाते हैं। मुझे ध्यान से सुनें। यह परमेश्वर की योजना है। यह सारी जातियों में

सुसमाचार का प्रचार करने की प्राथमिक योजना है। और कोई दूसरी योजना नहीं है। कोई दूसरी योजना नहीं है। आप इसे पवित्रशास्त्र में कहीं भी नहीं देखते हैं।

निश्चित रूप से, लोग कह सकते हैं, "क्या परमेश्वर के इस सुसमाचार को दूसरे तरीकों से सुनाने की सामर्थ नहीं है?" निःसन्देह, परमेश्वर इसे आकाश में बादलों पर लिख देता। वह सुसमाचार को लिख सकता था। कोई सन्देह नहीं कि वह बादलों में पूरे रोमी मार्ग को दिखा सकता था। वह ऐसा कर सकता था। उसमें ऐसा करने की सामर्थ है। उसमें अपने आप को स्वप्नों और दर्शनों में प्रकट करने की सामर्थ है। आज विशेषतः मुस्लिम क्षेत्रों ऐसी बहुत सी गवाहियाँ हैं जिनमें परमेश्वर अपने आप को स्वप्नों एवं दर्शनों में प्रकट करता है। लेकिन मैं आपको याद दिला सकता हूँ कि जब आप प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ते हैं तो उसमें आपको ऐसा एक भी वचन नहीं मिलेगा जहाँ सुसमाचार मसीह के सेवकों की गवाही के अलावा दूसरी जातियों तक पहुँचा हो।

कुरनेलियुस के बारे में आप क्या कहेंगे? वह एक दर्शन देखता है, ठीक? परमेश्वर क्या करता है? वह पतरस को बुलाता है। वह कहता है, "उठकर जा और उसे बता कि इसका क्या मतलब है। उसे सुसमाचार के बारे में बता।" पूरी प्रेरितों के काम की पुस्तक में सुसमाचार केवल एक ही मार्ग से जातियों तक पहुँचता है, और वह है, यीशु मसीह के सत्य का प्रचार करने वाले पुरूषों और स्त्रियों, लड़कों और लड़कियों के द्वारा, जो सिखाने की इस जिम्मेदारी को लेते हैं और अपने आप को उसके लिए दे देते हैं। यह परमेश्वर की प्राथमिक योजना है और कोई दूसरी योजना नहीं है।

और मैं आप से कहता हूँ कि मेरी प्रार्थना है कि जिस धर्मशास्त्रीय सत्य को परमेश्वर हमारे दिलों में देगा वह यह है, परमेश्वर की इच्छा यह नहीं है कि इस सवाल का उत्तर देने के लिए कलीसिया रविवार की सुबह एक साथ एकत्रित होकर बैठी रहे। कलीसिया के लिए परमेश्वर की इच्छा यह है कि वह इस प्रश्न को पूरी तरह से अलग कर दे।

मेरी इसके बारे में वाद—विवाद करने में कोई रूचि नहीं है कि उन लोगों का क्या होगा जिन्होंने कभी यीशु के बारे में नहीं सुना है। यह मेरा उद्देश्य नहीं है। मेरा उद्देश्य यह नहीं है कि हम केवल हमारे लिए एक अच्छा धर्मविज्ञानी विचार—विमर्श करें। आपके लिए मेरा उद्देश्य यह है कि पवित्र आत्मा की प्रेरणा के अन्तर्गत आप इस प्रश्न को देखें और उसके भार एवं उसकी गम्भीरता को महसूस करें और अपने जीवन में यह सोचना शुरू करें कि हम कलीसिया में इस प्रश्न को पूरी तरह से हल्का करने का हिस्सा कैसे बन

सकते हैं ताकि हमें एक साथ बैठकर यह सोचना न पड़े कि उन लोगों का क्या होगा जिन्होंने कभी यीशु के बारे में नहीं सुना है क्योंकि हम उन एक अरब लोगों को जानते हैं जिन्होंने उसके नाम को सुन लिया है।

और मैं जानता हूँ आप क्या सोच रहे हैं, "डेव, एक बार फिर तुम थोड़ा आदर्शवादी बन रहे हो। कलीसिया के रूप में हम लाखों–करोड़ों लोगों को सुसमाचार से कैसे प्रभावित कर सकते हैं?" और यह एक अच्छा सवाल है।

पौलुस की सेवकाई के आरम्भ में लोगों ने सुसमाचार को सुना था, सुसमाचार को स्वीकार किया था, और सुसमाचार पर विश्वास किया था। पौलुसका इस क्षेत्र में बड़ा प्रभाव था। सुसमाचार आगे बढ़ने लगा। पौलुस स्पेन जाना चाहता था, लेकिन वह कभी वहाँ तक पहुँच नहीं सका। वास्तव में, उसे यरूशलेम में गिरफ्तार कर लिया गया और उसे रोम में ले जाया गया, लेकिन वैसे नहीं जैसे उसने योजना बनाई थी। वह जंजीरों में था। अपने जीवन के अन्त तक वह स्पेन में नहीं जा सका, स्पेन ने कभी सुसमाचार नहीं सुना था। तो, इसका क्या मतलब है? पौलुस, तुम एक असफल व्यक्ति हो। पौलुस, तुम बहुत ज्यादा आदर्शवादी थे। पौलुस, तुमने अपना जीवन इस उद्देश्य के लिए दे दिया, लेकिन ऐसे बहुत से क्षेत्र थे जहाँ तक तुम कभी पहुँच नहीं सके। तुमने अपने आप को उस मिशन में लगाया ही क्यों था?

लेकिन इससे पहले कि हम पौलुस को असफल कहें, उसकी मृत्यु के बाद दो सदियों के अन्दर, सुसमाचार न केवल स्पेन में, बल्कि संसार के उस सम्पूर्ण भाग में फैल गया। और मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ, उस समय कोई टीवी नहीं था, कोई रेडियो नहीं था और न ही इन्टरनेट था। केवल पुरूष और महिलाएँ थे जिनके दिलों में सुसमाचार था और वे अपने मुँह से उसका प्रचार करते थे। उन्होंने अपना जीवन उसमें लगा दिया था।

तो कलीसिया के लिए मेरा सवाल यह है कि आप संसार पर किस तरह का प्रभाव छोड़ने वाले हैं? भाइयो और बहनो, अपने जीवन में और कलीसिया के जीवन में परमेश्वर के पवित्र आत्मा की सामर्थ को कम करके न आँकें। जब आप संसार में देखते हैं, तो आप अब भी कम से कम 100 ऐसी जातियों को देख सकते हैं जिनके पास आज भी सुसमाचार नहीं है। और मैं आप से कहता हूँ कि पूरे दिल से मेरा यह विश्वास है कि संसार को सुसमाचार से भरने के लिए परमेश्वर कलीसिया का उपयोग करना चाहता है। और वह संसार की दशा को बदलना चाहता है।

उसने हमें सारी जातियों में सुसमाचार का प्रचार करने की आज्ञा दी है। जरूरत को देखने में परमेश्वर हमारी सहायता करे। उन्होंने उसका नाम भी नहीं सुना है। इससे अधिक महत्वपूर्ण कुछ नहीं है। यह अधिक महत्वपूर्ण है, परमेश्वर यह देखने में हमारी सहायता करे कि यह करमुक्त योजना को बनाने से अधिक महत्वपूर्ण है। यह एक अच्छे घर से, एक अच्छी कार से अधिक महत्वपूर्ण है। यह एक अच्छे, आरामदायक जीवन को बिताने से अधिक महत्वपूर्ण है।

उन्होंने उसका नाम भी नहीं सुना है। और मैं आप से पूछना चाहता हूँ कि क्या आप इस कार्य के लिए तैयार हैं? छात्रो, किशोरो, तुम्हारे सामने तुम्हारा पूरा जीवन, तुम्हारी योजनाएँ, तुम्हारे सपने हैं, तुम्हारी महत्वाकांक्षाएँ हैं; क्या तुम इस कार्य के लिए तैयार हो? क्या तुम यह कहने के लिए तैयार हो, मेरा सम्पूर्ण जीवन एक ही दिशा में निर्देशित होगा, सारी जातियों में सुसमाचार का प्रचार करना, क्या तुम तैयार हो? जो लोग अक्सर हाथ बाँधे हुए बैठकर सोचते रहते हैं, "कलीसिया के पास वास्तव में मेरे लिए क्या है? इस कलीसिया के हिस्से के रूप में क्या कर सकता हूँ?" क्या आप खड़े होकर कहेंगे, मैं इस मिशन में शामिल होना चाहता हूँ? पत्नियो, पतियो, घरेलू स्त्रियो, व्यापारियो, क्या तुम तैयार हो? क्या तुम इस संसार का सुखों को त्यागने और यह कहने के लिए तैयार हो कि, मैं इस सुसमाचार को सारी जातियों में फैलाऊँगा, चाहे इसके लिए मुझे या मेरे परिवार को कोई भी कीमत क्यों न चुकानी पड़े? बुजुर्गो, क्या आप तैयार हैं? क्या आप इस बात में हमारे लिए एक आदर्श बनेंगे कि इस सुसमाचार को सारी जातियों में प्रचार करने के लिए अपने जीवन के आखिरी वर्षों का उपयोग करने का क्या मतलब है? क्या आप तैयार हैं?

परमेश्वर हमारी सहायता करे कि हम ऐसी कलीसिया न बनें जो आराम से बैठी रहे और इस तरह से जीवन बिताए जैसे कि यीशु मसीह का नाम सुने बिना जीने वाले करोड़ों लोग ठीक हैं। मैं आपको यह कहने के कुछ व्यवहारिक तरीके बताता हूँ कि, "मैं तैयार हूँ।"

पहला व्यवहारिक तरीका, मैं चाहता हूँ आप देखें कि कैसे गिडिन्स वाले सुसमाचार को बाइबल की प्रतियों का वितरण करके संसार भर के लोगों के लिए उपलब्ध करवा रहे हैं और आप देखेंगे कि पाँच डॉलर प्रति पुस्तक के खर्च पर आप बाइबल वितरित कर सकते हैं जो संसार भर के 175 से अधिक देशों में भेजी जाती हैं। और परमेश्वर के वचन में हमने जो पढ़ा है और हमने जो प्रार्थना की है, उसके अनुसार मैं आपको व्यवहारिक तरीका बताना चाहता था, और इस समय, मेरे पास इस सुसमाचार को दूसरे देशों में फैलाने का एक व्यवहारिक तरीका है। अतः, मैं आपको निमंत्रण देना चाहता हूँ कि आप इसी समय प्रार्थना

करें और कहें, "परमेश्वर, मैं देने के द्वारा किस तरह इस सुसमाचार को दूसरे देशों में फैला सकता हूँ जिससे कि यह वचन दूसरे लोगों के हाथों में पहुँच सके?" मैं संसार भर में लोगों के हाथों में बाइबल देने का प्रशंसक हूँ। और मेरे विचार से यह इसके योग्य है कि हम अपने आप को इसके लिए दे दें। मैं चाहता हूँ आप उन लोगों के लिए प्रार्थना करें जो आपके देने के कारण परमेश्वर के वचन को सुनेंगे और परिवार के साथ प्रार्थना करें, "परमेश्वर, हम सारी जातियों में सुसमाचार प्रचार करने का हिस्सा बनना चाहते हैं।"

और मैं आपको इस तरह से प्रत्युत्तर देने का अवसर देना चाहता हूँ। साथ ही, मैं आपको यह कहने का भी अवसर देना चाहता हूँ कि, "आप मेरे जीवन को जानते हैं; मुझे इससे जूझने की जरूरत है कि मैं सारी जातियों में इस सुसमाचार का प्रचार कैसे करूँगा।" और कलीसियाई परिवार के रूप में कहें, "चाहे मैं एक छात्र हूँ, किशोर हूँ, वयस्क हूँ या उनके बीच का कोई भी व्यक्ति, मैं वास्तव में यह देखना चाहता हूँ कि मेरा जीवन उन जातियों में सुसमाचार को कैसे फैला सकता है जिन्होंने पहले कभी यीशु का नाम नहीं सुना है।"

और यदि आप इसमें शामिल होना चाहते हैं और आप कहते हैं, मुझे अपने जीवन में कुछ बदलाव लाने की जरूरत है और मुझे सोचने की जरूरत है कि मैं इसमें कैसे शामिल हो सकता हूँ। मैं आपको यह कहने का निमंत्रण देना चाहता हूँ कि, "मैं तैयार हूँ। मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि मैं तैयार हूँ और मैं सारी जातियों में सुसमाचार का प्रचार करने वाली कलीसिया का हिस्सा बनना चाहता हूँ।"

मैं जानता कुछ लोग ऐसे हैं जो परमेश्वर के सामने दोषी हैं क्योंकि आपने कभी मसीह पर विश्वास नहीं किया है और मैं आपको बताना चाहता हूँ कि आपके लिए उसका अनुग्रह मुफ्त है। यह वास्तविक है। यह व्यक्तिगत है और यदि आपने पहले कभी मसीह पर विश्वास नहीं किया है, तो मैं आपको यह कहने का निमंत्रण देने चाहता हूँ कि, "मैं मसीह पर विश्वास करना चाहता हूँ।" और आज, आपका जीवन हमेशा के लिए पूरी तरह से बदल जाएगा क्योंकि परमेश्वर ने आपके उद्धार के लिए एक मार्ग तैयार किया है।

Permissions: You are permitted and encouraged to reproduce and distribute this material provided that you do not alter it in any way, use the material in its entirety, and do not charge a fee beyond the cost of reproduction. For web posting, a link to the media on our website is preferred. Any exceptions to the above must be approved by Radical.

Please include the following statement on any distributed copy: By David Platt. © David Platt & Radical. Website: Radical.net